

## मदन मोहन मालवीय की पत्रकारिता: राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में वैश्विक एवं वैचारिक योगदान

मान प्रकाश सिंह<sup>1</sup>, अखिलेश कुमार सिंह<sup>2</sup>, प्रभात रंजन<sup>3</sup>

### सारांश

प्रस्तुत शोध-आलेख महामना पंडित मदन मोहन मालवीय (1861-1946) के पत्रकारिता-जीवन का एक गहन विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। मालवीय जी का कार्यक्षेत्र भारतीय इतिहास के उस संधिकाल में था, जब औपनिवेशिक सत्ता का दमनकारी स्वरूप अपने चरम पर था। उन्होंने अनुभव किया कि केवल राजनीतिक आंदोलनों से राष्ट्र का पूर्ण उद्धार संभव नहीं है। अतः उन्होंने पत्रकारिता को सूचना संप्रेषण के पारंपरिक साधन से ऊपर उठाकर राष्ट्रनिर्माण का एक ठोस वैचारिक अधिष्ठान बनाया। इस अध्ययन के अंतर्गत उनके द्वारा स्थापित और संचालित प्रमुख पत्रों- 'हिन्दुस्तान', 'अभ्युदय', 'मर्यादा' और अंग्रेजी दैनिक 'लीडर'-का गहन परीक्षण किया गया है। इन प्रकाशनों के माध्यम से मालवीय जी ने न केवल समाचार प्रसारित किए, बल्कि पूरे भारत में 'लोक-शिक्षण' के एक नए युग का सूत्रपात किया। उन्होंने भाषाई राष्ट्रवाद को एक नई दिशा प्रदान की और प्रेस की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश कानूनों के विरुद्ध निरंतर वैधानिक संघर्ष किया। उन्होंने वैश्विक पटल पर भारतीय मेधा और पक्ष को पूरी तार्किकता के साथ प्रस्तुत किया ताकि अंतरराष्ट्रीय जनमत भारत के पक्ष में जागृत हो सके। शोध का निष्कर्ष यह प्रतिपादित करता है कि मालवीय जी का पत्रकारिता-दर्शन सत्य, शुचिता और मर्यादा के उन स्तंभों पर आधारित था, जिसने स्वाधीनता संग्राम को एक दीर्घकालिक नैतिक और बौद्धिक दिशा प्रदान की।



**मुख्य शब्द:** मदन मोहन मालवीय, हिंदी पत्रकारिता, राष्ट्रनिर्माण, प्रेस स्वतंत्रता, वैधानिक प्रतिरोध, जन-जागरण, वैचारिक अधिष्ठान, लोक-शिक्षण.



This article is published under the Creative Commons Attribution-Non-commercial (CC BY-NC) license. Readers are free to share, adapt, and reproduce the material for non-commercial purposes, with appropriate credit to the author(s) and the source. Permission is required for any commercial use.

### परिचय

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी का प्रारंभ भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास का संधिकाल था। यह वह समय था जब भारतीय समाज अपनी पुरानी सांस्कृतिक जड़ताओं को त्याग रहा था। समाज के भीतर मध्यकालीन सोच की जगह आधुनिक राष्ट्रवाद की नई संकल्पना जन्म ले रही थी (मिश्र, 1998)। इस वैचारिक बदलाव की प्रक्रिया में पत्रकारिता ने उस 'बौद्धिक ऊर्जा' का उत्सर्जन किया जिसने सुप्त जनमानस को जगा दिया। पत्रकारिता ने लोगों को उनके राजनीतिक अधिकारों के प्रति सचेत किया। इसने एक साझा राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान विकसित की। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय इसी वैचारिक क्रांति के प्रखर प्रणेता थे। उनका पत्रकारिता-कर्म उनके समग्र जीवन-दर्शन का ही विस्तार था। उनके लिए समाचार पत्र का संपादन केवल एक पेशा नहीं था। यह राष्ट्र की चेतना को जागृत करने का एक अत्यंत पवित्र अनुष्ठान था (अग्रवाल, 2004)। मालवीय

<sup>1</sup>विवरण: शोधार्थी, ऐतिहासिक अध्ययन एवं पुरातत्व विभाग, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, [manprakash101@gmail.com](mailto:manprakash101@gmail.com)

<sup>2</sup>शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार, [singhakmgcub@gmail.com](mailto:singhakmgcub@gmail.com)

<sup>3</sup>शोधार्थी, इतिहास विभाग, स्कूल ऑफ लिबरल एंड क्रिएटिव आर्ट्स (सामाजिक विज्ञान और भाषाएं), लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब, [pra.ran09@gmail.com](mailto:pra.ran09@gmail.com)

जी का उद्देश्य केवल ब्रिटिश नीतियों का विरोध करना नहीं था। वे भारतीय मानस में व्याप्त आत्म-विस्मृति को नष्ट करना चाहते थे। वे उस हीनता-बोध को समाप्त करना चाहते थे जो लंबी गुलामी के कारण पैदा हुआ था।

मालवीय जी की दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट थी। उनका मानना था कि अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व किए बिना वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है। भाषाई और सांस्कृतिक स्वावलंबन के बिना राजनीतिक स्वराज्य एक निष्प्राण संकल्पना है (मालवीय, 1961)। उन्होंने प्रेस को 'चलते-फिरते विश्वविद्यालयों' (Mobile Universities) की संज्ञा दी थी। पत्रकारिता का दायित्व केवल घटनाओं की सूचना देना नहीं है। इसका मुख्य कार्य जनता के नैतिक चरित्र का निर्माण करना है। इसका लक्ष्य समाज को नागरिक कर्तव्यों के प्रति अनुशासित और सक्रिय बनाना है (सिंह, 2010)। उन्होंने आजीवन इस सिद्धांत का पालन किया कि लेखनी केवल सत्य की प्रतिष्ठा के लिए हो। लोक-कल्याण ही पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। प्रस्तुत शोध इसी महान वैचारिक यात्रा का विश्लेषण करता है। मालवीय जी ने पत्रकारिता को एक सामाजिक उत्तरदायित्व माना। उनके चिंतन में समाचार पत्र समाज के चरित्र निर्माण की प्रयोगशालाएँ थीं। उन्होंने पत्रों की भाषा को सदैव संयमित और तर्कपूर्ण रखा। वे उत्तेजना के स्थान पर विवेक को प्राथमिकता देते थे। उनकी पत्रकारिता ने जनमानस को संगठित होने के लिए प्रेरित किया। मालवीय जी का पत्रकारिता-दर्शन 'सत्य' और 'अहिंसा' के गांधीवादी सिद्धांतों के उदय से भी पूर्व सक्रिय था। उन्होंने भारतीय मेधा को एक तार्किक आधार प्रदान किया। उन्होंने प्रेस को सत्ता के विरुद्ध 'नैतिक प्रतिवाद' का मंच बनाया। उनके लेखन में आंकड़ों की सटीकता और ऐतिहासिक संदर्भों की प्रचुरता होती थी। वे जानते थे कि साम्राज्यवादी शक्तियों को केवल भावुकता से नहीं जीता जा सकता। इसके लिए अकाट्य साक्ष्यों की आवश्यकता होती है। उनके संपादन में निकलने वाले पत्र राष्ट्र की 'बौद्धिक रीढ़' बन गए। उन्होंने पत्रकारिता को क्षणिक लाभ का सौदा कभी नहीं समझा। उनके लिए यह राष्ट्र की सेवा का माध्यम था। उन्होंने अपनी लेखनी से करोड़ों भारतीयों के भीतर स्वाभिमान का संचार किया। उनकी यह राष्ट्र-दृष्टि आज के पत्रकारिता जगत के लिए भी एक मार्गदर्शक स्तंभ है।

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: हिंदी पत्रकारिता का विकास और संक्रमण

हिंदी पत्रकारिता का विकास भारतीय राष्ट्रवाद के प्रसार के साथ जुड़ा हुआ है। 1826 में 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन से इसकी प्राथमिक यात्रा शुरू हुई थी। मालवीय युग तक आते-आते इसने एक नया और परिपक्व स्वरूप ग्रहण कर लिया था (नरेन्द्र मोहन, 2001)। इस विकास को समझने के लिए भारतेंदु युग और मालवीय युग के बीच के सातत्य को देखना होगा। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी पत्रकारिता को सांस्कृतिक पहचान दी थी। उन्होंने लेखनी से औपनिवेशिक आर्थिक शोषण की ओर जनता का ध्यान खींचा था। मालवीय जी ने इसी वैचारिक नींव पर एक वैधानिक रूप से सुदृढ़ इमारत खड़ी की। उन्होंने पत्रकारिता को केवल भावनात्मक विरोध तक सीमित नहीं रहने दिया। उन्होंने इसमें तार्किकता और विधिक मजबूती का समावेश किया (शुक्ल, 2002)। 1880 के दशक तक हिंदी पत्रकारिता मुख्य रूप से साहित्यिक थी। समस्याओं का चित्रण व्यंग्य या कविताओं के माध्यम से अधिक होता था। मालवीय जी ने इस शैली में क्रांतिकारी बदलाव किया।

उन्होंने लेखों में गहन शोध और सांख्यिकीय आंकड़ों का प्रयोग शुरू किया। उन्होंने विधिक तर्कों को लेखनी का मुख्य आधार बनाया (जोशी, 2010)। मालवीय जी जानते थे कि औपनिवेशिक सत्ता से केवल भावनाओं के आधार पर नहीं लड़ा जा सकता। अंग्रेजों के पास अपनी नीतियों को सही ठहराने के लिए कानून की ताकत थी। उनका मुकाबला करने के लिए उन्हीं के तर्कों और आंकड़ों का उपयोग अनिवार्य था। मालवीय जी ने इसी रणनीति को अपनी पत्रकारिता का केंद्र बनाया। उनके प्रयासों से हिंदी पत्रकारिता एक गंभीर बौद्धिक संस्थान के रूप में स्थापित हुई। उनकी शैली ने हिंदी गद्य को एक नया प्रौढ़ स्वरूप प्रदान किया। इसने आने वाली पीढ़ी के पत्रकारों के लिए कठोर मानक तय किए। उन्होंने संपादन को एक गंभीर उत्तरदायित्व बनाया। उनके पत्रों में छपने वाली हर खबर की सत्यता की जांच होती थी। वे अफवाहों के सख्त विरोधी थे। इस प्रकार उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को अकादमिक गरिमा प्रदान की (मिश्र, 2005)।

मालवीय जी का आगमन उस समय हुआ जब प्रेस दमन के लिए 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' (1878) जैसे कानून प्रभावी थे। ऐसे दमनकारी समय में उन्होंने संतुलन का रास्ता अपनाया। उन्होंने 'संवैधानिक विरोध' की एक नई परंपरा शुरू की। उनकी भाषा में कभी कटुता नहीं होती थी, लेकिन उनके तर्क बहुत तीखे होते थे। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को 'साहित्य' से निकालकर 'राजनीति और अर्थशास्त्र' की ओर मोड़ा। यह एक बड़ा संक्रमण था। इससे पूर्व हिंदी पत्र केवल धर्म या कला तक सीमित थे। मालवीय जी ने पहली बार बजट, राजस्व और प्रशासनिक नीतियों पर लेख लिखे। उन्होंने हिंदी पाठक को एक 'नागरिक' के रूप में तैयार किया। उनके पत्रों ने ग्रामीण समाज को वैश्विक घटनाओं से जोड़ा। इस प्रक्रिया ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक जन-आधार प्रदान किया। उन्होंने पत्रकारिता को एक 'अनुशासन' के रूप में स्थापित किया।

### 'हिन्दुस्तान' (1887-1889): नवीन प्रतिमानों की स्थापना

मालवीय जी की औपचारिक पत्रकारिता यात्रा 1887 में शुरू हुई। उन्होंने कालाकांकर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'हिन्दुस्तान' का संपादन भार ग्रहण किया। कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह ने मालवीय जी की प्रतिभा को पहचाना था। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में यह एक निर्णायक मोड़ था (सिंह, 2010)। 'हिन्दुस्तान' उस समय का पहला हिंदी दैनिक था जिसने राजनीतिक विषयों पर गंभीर चर्चा की। मालवीय जी ने इस पत्र से हिंदी पत्रकारिता को 'व्यावसायिक शुद्धता' और 'तथ्यात्मक निर्भीकता' से जोड़ा। उनके संपादन काल में तीन प्रमुख मानकों की स्थापना हुई-भाषाई शुद्धता, ऐतिहासिक सत्यता और निर्भीकता। मालवीय जी ने हिंदी को एक ऐसी शक्ति के रूप में विकसित किया जो प्रशासनिक शब्दावली को व्यक्त करने में समर्थ थी (मिश्र, 2005)।

उन्होंने सिद्ध किया कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं है। यह शासन के विश्लेषण की भाषा भी है। उन्होंने बालमुकुंद गुप्त और प्रतापनारायण मिश्र जैसे विद्वानों को अपने साथ जोड़ा। इस मंडल ने आधुनिक हिंदी गद्य को गढ़ा (पाण्डेय, 1986)। मालवीय जी का विश्वास था कि सरल और तर्कपूर्ण भाषा का प्रभाव गहरा होता है। 'हिन्दुस्तान' के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों की कृषि नीतियों की तीखी आलोचना की। उन्होंने आंकड़ों से दिखाया कि भारत का धन विदेशों में कैसे जा रहा है। उन्होंने समझाया कि क्यों छोटे किसानों की कमर तोड़ रहा है। उन्होंने सिद्ध किया कि पत्रकारिता सत्ता की चाटुकारिता का माध्यम नहीं है। इसका वास्तविक धर्म जनता की पीड़ा को शासन तक पहुँचाना है। उनके संपादन में 'हिन्दुस्तान' भारतीय जनता की वास्तविक आवाज़ बना। इससे हिंदी प्रदेशों में राजनीतिक जागरूकता की लहर पैदा हुई।

'हिन्दुस्तान' में काम करते हुए मालवीय जी ने संपादकीय स्वतंत्रता का उदाहरण पेश किया। उन्होंने राजा रामपाल सिंह के संरक्षण में रहते हुए भी अपनी लेखनी को कभी झुकने नहीं दिया। उन्होंने समाचारों के चयन में निष्पक्षता को सर्वोपरि रखा। उनके संपादन में पत्र ने स्थानीय समस्याओं को भी वैश्विक संदर्भों में देखा। उन्होंने कृषि ऋण, लगान और सिंचाई की समस्याओं पर निरंतर लिखा। 'हिन्दुस्तान' ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक संदेशों को आम जनता तक पहुँचाया। इसने हिंदी भाषी क्षेत्र में कांग्रेस के प्रति समर्थन जुटाया। मालवीय जी ने इस पत्र के माध्यम से एक प्रशिक्षित पत्रकार वर्ग तैयार किया। उनकी कार्यप्रणाली में 'समय की पाबंदी' और 'तथ्यों की जाँच' अनिवार्य थी। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को एक मिशनरी उत्साह के साथ व्यावसायिक गरिमा दी।

### 'अभ्युदय' (1907): राष्ट्रवादी चेतना का प्रकाश-स्तंभ

1907 में प्रयाग से 'अभ्युदय' का प्रकाशन मालवीय जी के जीवन की बड़ी उपलब्धि थी। यह समय भारतीय राजनीति में अत्यधिक उथल-पुथल का था। 1905 के बंगाल विभाजन ने पूरे देश को आंदोलित कर दिया था। कांग्रेस के भीतर नरम दल और गरम दल के बीच वैचारिक संघर्ष तीव्र था (चन्द्रा, 1988)। ऐसे संकटपूर्ण समय में 'अभ्युदय' ने एक 'मार्गदर्शक' की भूमिका निभाई। पत्र का शीर्षक ही एक गौरवशाली राष्ट्रवादी उद्घोष था। इसका अर्थ था-भारत का नया उत्थान। मालवीय जी ने इस पत्र से स्वराज्य की अवधारणाओं को जन-साधारण के लिए सुगम बनाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि स्वराज्य का अर्थ केवल

सत्ता का हस्तांतरण नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ अपनी भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव का पुनरुद्धार करना है (मालवीय, 1961)। 'अभ्युदय' ने स्वदेशी के संदेश को घर-घर पहुँचाया।

मालवीय जी ने लेखों से समझाया कि आर्थिक स्वावलंबन ही राजनीतिक स्वतंत्रता की पहली शर्त है। पत्र ने शिक्षित युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने में 'उत्प्रेरक' (Catalyst) का कार्य किया (पाण्डेय, 1986)। उन्होंने युवाओं के चरित्र में नैतिकता और दृढ़ संकल्प के बीज बोए। यही विचार बाद में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के स्तंभ बने। 'अभ्युदय' केवल समाचार पत्र नहीं था, वह एक आंदोलन बन गया था। इसके संपादकीय लेखों की प्रतीक्षा दूर-दराज के गाँवों में होती थी। इसने ग्रामीण और शहरी भारत के बीच वैचारिक सेतु बनाया। इसने किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। सिंचाई की कमी और लगान की समस्या पर इसके लेख आज भी ऐतिहासिक दस्तावेज हैं।

मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को एक 'शिक्षण केंद्र' के रूप में विकसित किया। उन्होंने इसमें विश्व इतिहास, भूगोल और विज्ञान के लेख भी शामिल किए। उनका मानना था कि एक नागरिक को शिक्षित होना अनिवार्य है। 'अभ्युदय' ने स्वदेशी आंदोलन को एक संगठित स्वरूप दिया। इसमें स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार के लिए विशेष स्तंभ होते थे। मालवीय जी ने पत्र के माध्यम से 'गरम दल' के उत्साह और 'नरम दल' के विवेक के बीच समन्वय बिठाया। उन्होंने जनता को सिखाया कि स्वाधीनता के लिए रचनात्मक कार्यों की आवश्यकता है। उन्होंने खादी, ग्राम-सुधार और राष्ट्रीय शिक्षा पर निरंतर बल दिया। 'अभ्युदय' ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम को एक व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया। इसने उत्तर भारत में राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव रखी।

### **'लीडर' और 'मर्यादा': वैश्विक संवाद एवं बौद्धिक प्रतिरोध की शक्ति**

मालवीय जी एक अत्यंत दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे। वे जानते थे कि केवल क्षेत्रीय भाषाओं से ब्रिटिश वैश्विक नीतियों को प्रभावित नहीं किया जा सकता (जोशी, 2010)। अंग्रेजों को उनकी ही भाषा में जवाब देना अनिवार्य था। इससे वैश्विक जनमत भारत के पक्ष में हो सकता था। इसी आवश्यकता हेतु 1909 में उन्होंने अंग्रेज़ी दैनिक 'लीडर' (The Leader) की स्थापना की। उस समय प्रयाग का 'पायोनियर' पत्र ब्रिटिश सत्ता का मुखपत्र था। वह भारतीयों को स्वशासन के अयोग्य बताता था। 'लीडर' ने आंकड़ों और तर्कों से 'पायोनियर' के हर दुष्प्रचार का खंडन किया। मालवीय जी ने सी.वाई. चिंतामणि जैसे कुशल संपादक को इसका दायित्व सौंपा। 'लीडर' ने अंग्रेज़ी पत्रकारिता के ऐसे उच्च मानक स्थापित किए जिनसे ब्रिटिश नौकरशाही दबाव महसूस करने लगी (नरेन्द्र मोहन, 2001)।

'लीडर' के लेख ब्रिटिश संसद तक पहुँचने लगे। इसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई। मालवीय जी ने दुनिया को दिखाया कि भारतीय मेधा पश्चिम से कम नहीं है। इसी कड़ी में 1910 में उन्होंने 'मर्यादा' नामक मासिक पत्रिका प्रारंभ की। 'मर्यादा' ने हिंदी पत्रकारिता में वैचारिक गंभीरता के नए आयाम स्थापित किए। जहाँ दैनिक पत्र सामयिक घटनाओं तक सीमित थे, वहीं 'मर्यादा' ने दर्शन, इतिहास और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर शोधपरक लेख प्रकाशित किए (सिंह, 2010)। मालवीय जी का मानना था कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिकों को वैश्विक राजनीति की समझ होनी चाहिए। 'मर्यादा' ने भारतीय बुद्धिजीवियों को एक मंच दिया जहाँ वे औपनिवेशिक बौद्धिक दासता के विरुद्ध लड़ सकें।

'लीडर' ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आवाज़ को वैश्विक पटल पर रखा। इसके माध्यम से ब्रिटिश लिबरल नेताओं तक भारतीय पक्ष पहुँचा। मालवीय जी ने 'लीडर' में संवैधानिक सुधारों पर विस्तृत लेख लिखे। उन्होंने आंकड़ों से सिद्ध किया कि भारत पर थोपा गया सैन्य खर्च अनुचित है। वहीं 'मर्यादा' ने हिंदी पाठक को विश्व के बड़े क्रांतियों और आंदोलनों से परिचित कराया। इसमें रूस, जापान और तुर्की के राजनीतिक परिवर्तनों पर शोध लेख छपते थे। मालवीय जी का यह वैश्विक दृष्टिकोण उनकी पत्रकारिता को अन्य समकालीनों से अलग बनाता था। वे जानते थे कि स्वाधीनता का युद्ध केवल गलियों में नहीं, बल्कि विश्व के बौद्धिक मंचों पर भी लड़ा जाना है। उन्होंने पत्रकारिता को एक कूटनीतिक औजार के रूप में उपयोग किया।

## प्रेस की स्वतंत्रता एवं वैधानिक संघर्ष

मालवीय जी के चिंतन में प्रेस की स्वतंत्रता एक पवित्र और जन्मसिद्ध अधिकार थी। उनका विश्वास था कि प्रेस की आवाज़ दबने से लोकतंत्र का पतन निश्चित है (अग्रवाल, 2004)। औपनिवेशिक सरकार दमनकारी कानूनों से प्रेस को नियंत्रित करती रहती थी। मालवीय जी ने इन प्रयासों का हमेशा वैधानिक विरोध किया। वे एक वरिष्ठ अधिवक्ता थे और कानून की बारीकियों को समझते थे। उन्होंने वैधानिक शक्ति का प्रयोग प्रेस की रक्षा हेतु किया। 1910 में जब ब्रिटिश प्रशासन ने राष्ट्रवादी पत्रकारिता को दबाने हेतु 'प्रेस अधिनियम' पारित किया, तो मालवीय जी ने उसका मुकाबला किया। उन्होंने साम्राज्यवादी विधान परिषद (Imperial Legislative Council) में इसके विरुद्ध ऐतिहासिक भाषण दिया। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी कि दर्पण नष्ट करने से चेहरे की कुरूपता नहीं छिपती।

यदि शासन की नीतियां गलत हैं, तो प्रेस का विरोध न्यायसंगत है। उन्होंने तर्क दिया कि स्वतंत्र प्रेस सरकार हेतु 'सुरक्षा वाल्व' (Safety Valve) का कार्य करता है (अग्रवाल, 2004)। मालवीय जी ने पत्रकारिता की स्वतंत्रता को एक महान नैतिक उत्तरदायित्व माना। उन्होंने संपादन में हमेशा परिष्कृत और शालीन भाषा का प्रयोग किया। उन्होंने कभी व्यक्तिगत आक्षेपों का सहारा नहीं लिया। उनकी शालीनता ही उनकी सबसे बड़ी ताकत थी। इसने ब्रिटिश प्रशासन को दमन का कानूनी अवसर नहीं दिया। वे मानते थे कि पत्रकार का कर्तव्य केवल आलोचना नहीं, बल्कि मार्गदर्शन भी है। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष किया, वह आम नागरिक की अभिव्यक्ति की रक्षा के लिए था।

मालवीय जी ने कौंसिल के भीतर प्रेस कानूनों की विसंगतियों को सार्वजनिक किया। उन्होंने दमनकारी धाराओं के विरुद्ध जनता को जागरूक किया। उनके भाषणों ने प्रेस के दमन को एक नैतिक संकट बना दिया। उन्होंने कई बार पत्रकारों की सुरक्षा और उनकी जमानत राशि को लेकर वैधानिक लड़ाई लड़ी। उनका तर्क था कि यदि प्रेस को बोलने नहीं दिया जाएगा, तो जनता में असंतोष गुप्त रूप से बढ़ेगा। यह शासन के लिए अधिक घातक होगा। उनकी इस तार्किक शैली ने कई बार प्रशासन को अपने निर्णय बदलने पर विवश किया। उन्होंने प्रेस स्वतंत्रता को 'मानवाधिकार' के रूप में स्थापित किया। उनके प्रयासों से भारतीय प्रेस को एक नया आत्मविश्वास मिला। उन्होंने पत्रकारिता में 'सेल्फ-रेगुलेशन' (स्व-नियमन) का पक्ष लिया।

## आर्थिक पत्रकारिता और ग्रामीण सरोकार

मालवीय जी की पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण पक्ष 'आर्थिक राष्ट्रवाद' था। उन्होंने समाचार पत्रों में भारत के आर्थिक शोषण के विरुद्ध विस्तार से लिखा। उनका मानना था कि भारतीय गरीबी विदेशी सत्ता की गलत नीतियों का परिणाम है (चन्द्रा, 1988)। उन्होंने किसानों की दयनीय स्थिति पर गहरा शोक प्रकट किया। उन्होंने लेखों के माध्यम से किसानों की ऋणग्रस्तता की समस्या को उजागर किया। सिंचाई की कमी और लगान की ऊंची दरों पर उन्होंने सरकार को आंकड़ों के साथ घेरा। उन्होंने सिद्ध किया कि ब्रिटिश नीतियां भारत को केवल कच्चे माल का बाजार बना रही हैं (गुप्त, 1975)। उन्होंने 'नमक कर' (Salt Tax) जैसे दमनकारी करों का प्रखर विरोध किया।

मालवीय जी ने ग्रामीण भारत को राष्ट्र की वास्तविक शक्ति माना। उनकी पत्रकारिता ने गाँवों की उपेक्षा के विरुद्ध आवाज़ उठाई। 'अभ्युदय' के शोधपरक लेखों ने कृषि नीति में सुधार की नई बहस शुरू की। उनकी आर्थिक पत्रकारिता ने स्पष्ट किया कि राजनीतिक स्वराज्य हेतु आर्थिक स्वराज्य अनिवार्य है। मालवीय जी ने भारतीय कुटीर उद्योगों के संरक्षण के लिए निरंतर लेखनी चलाई। उन्होंने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार को आर्थिक स्वावलंबन से जोड़ा। उनके पत्रों ने स्वदेशी के महत्व को

सांख्यिकीय तर्कों से समझाया। उन्होंने दिखाया कि कैसे भारतीय धन का प्रवाह इंग्लैंड की ओर हो रहा है। उनकी आर्थिक दृष्टि दादाभाई नौरोजी के 'धन के निष्कासन' सिद्धांत (Drain Theory) से प्रभावित थी।

उन्होंने इस सिद्धांत को सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचाया। उनके लेखों ने ग्रामीण भारत में नई चेतना का संचार किया। किसानों ने अपनी गरीबी के राजनीतिक कारणों को समझना शुरू किया। मालवीय जी ने कृषि में आधुनिक तकनीकों और सहकारी प्रणालियों की वकालत की। उन्होंने 'अभ्युदय' में एक कृषि स्तंभ शुरू किया था। इसमें मिट्टी की उर्वरता, बीजों का चयन और पशुपालन पर जानकारी होती थी। उन्होंने सिद्ध किया कि पत्रकारिता ग्रामीण उत्थान का एक प्रभावी माध्यम है। उनके पत्रों ने ग्रामीण ऋण राहत और लगान सुधार कानूनों के लिए जनमत तैयार किया। उन्होंने आर्थिक पत्रकारिता को लोक-कल्याण का औजार बनाया।

### पत्रकारिता, शिक्षा और समाज सुधार: एकात्म राष्ट्र-दृष्टि

मालवीय जी हेतु पत्रकारिता, शिक्षा और समाज सुधार राष्ट्रनिर्माण के ही अंग थे। उन्होंने समाचार पत्रों का उपयोग जन-शिक्षा के प्रभावी उपकरणों के रूप में किया (अग्रवाल, 2004)। मालवीय जी ने 'अभ्युदय' और 'लीडर' का रणनीतिक उपयोग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) की स्थापना हेतु किया। उन्होंने लेखों के माध्यम से विश्वविद्यालय की आवश्यकता और महत्ता समझाई। उन्होंने प्रेस के माध्यम से देशव्यापी धन संग्रह का आह्वान किया, जो सफल रहा (सिंह, 2014)। यह इतिहास का अनूठा उदाहरण है जहाँ पत्रकारिता ने एक महान शैक्षणिक संस्थान की नींव रखी। सामाजिक मोर्चे पर भी उनकी लेखनी सक्रिय थी।

'मर्यादा' के माध्यम से उन्होंने छुआछूत, बाल विवाह और अशिक्षा जैसी कुरीतियों पर प्रहार किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया। यद्यपि वे सनातनी थे, पर उनकी सोच मानवीय और प्रगतिशील थी। उन्होंने प्रेस के माध्यम से सामाजिक सदभाव और धार्मिक एकता का संदेश दिया। वे मानते थे कि शिक्षित समाज ही लोकतंत्र की रक्षा कर सकता है। मालवीय जी ने अपनी पत्रकारिता को समाज सुधार का माध्यम बनाया। उन्होंने सामाजिक व्याधियों को धार्मिक ढाल नहीं बनाने दिया। वे मानते थे कि धर्म वही है जो मनुष्य की उन्नति करे। 'मर्यादा' के लेखों में अक्सर प्राचीन गौरव और आधुनिक प्रगति का संगम मिलता था।

उन्होंने समाज के वंचित वर्गों को शिक्षा से जोड़ने की अपील की। उनके पत्रों ने अंधविश्वासों के विरुद्ध तार्किक संघर्ष किया। उन्होंने भारतीय समाज को समझाया कि आधुनिक विश्व में जीवित रहने हेतु सामाजिक बुराइयों को त्यागना होगा। BHU की स्थापना के लिए उन्होंने केवल राजाओं से नहीं, बल्कि आम पाठकों से भी सहयोग मांगा। उनकी इस अपील ने शिक्षा के प्रति राष्ट्रीय जागरूकता पैदा की। 'लीडर' में उन्होंने सामाजिक सुधारों के पक्ष में अनेक लेख लिखे। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक समाज आंतरिक रूप से संगठित नहीं होगा, वह बाहरी सत्ता का मुकाबला नहीं कर पाएगा। उनकी पत्रकारिता ने भारतीय समाज को एक आधुनिक और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान किया।

### भाषाई राष्ट्रवाद और हिंदी का संघर्ष

मालवीय जी की पत्रकारिता का मुख्य केंद्र भाषाई राष्ट्रवाद था। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रीय एकता का सशक्त सूत्र माना (मिश्र, 2012)। उनके अनुसार अपनी भाषा के बिना राष्ट्र का कोई गौरवशाली भविष्य नहीं होता। उन्होंने अदालतों और कार्यालयों में हिंदी को स्थान दिलाने हेतु लंबा संघर्ष किया। उनके पत्रों ने इस लड़ाई में प्रभावी भूमिका निभाई। उन्होंने हिंदी के मानकीकरण और 'देवनागरी' लिपि के वैज्ञानिक स्वरूप की वकालत की। उनके प्रयासों से ही हिंदी को वह सम्मान मिला जो आज दिखाई देता है। उनकी पत्रकारिता ने हिंदी भाषियों में अपनी भाषा के प्रति गौरव जगाया।

उन्होंने हिंदी को साहित्य की सीमाओं से निकालकर प्रशासन और विज्ञान की ओर मोड़ा। उनके द्वारा गढ़े गए अनेक शब्द आज भी प्रशासनिक शब्दावली का हिस्सा हैं (पाण्डेय, 2008)। भाषाई राष्ट्रवाद की उनकी चेतना ने स्वाधीनता आंदोलन को

नई शक्ति प्रदान की। मालवीय जी का मानना था कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति है। उन्होंने 'हिन्दुस्तान' के समय से ही पत्र की भाषा को सरल और गरिमापूर्ण रखा। उन्होंने हिंदी के माध्यम से पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का सपना देखा। उन्होंने हिंदी के पक्ष में वैधानिक जापन तैयार किए और उन्हें पत्रों से जनता तक पहुँचाया।

उन्होंने सिद्ध किया कि हिंदी किसी भाषा की विरोधी नहीं है, बल्कि वह भारत की एकता का आधार है। उनके संपादन में हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय चरित्र ग्रहण किया। उन्होंने कई लेखकों को हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने हिंदी टाइपोग्राफी और छपाई की तकनीक में सुधार के लिए प्रयास किए। मालवीय जी के प्रयासों के कारण हिंदी उत्तर भारत की सीमाओं को लांघकर पूरे देश के बीच संवाद का माध्यम बनी। उन्होंने 'नागरी प्रचारिणी सभा' के कार्यों को अपने समाचार पत्रों में प्रमुखता से छापा। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के लिए एक मानक शब्दावली का निर्माण किया। उनके अनुसार, हिंदी ही वह सेतु है जो उत्तर और दक्षिण को वैचारिक रूप से जोड़ सकता है।

### निष्कर्ष: राष्ट्रनिर्माण की वैचारिक विरासत

महामना मदन मोहन मालवीय की पत्रकारिता भारतीय राष्ट्रनिर्माण की 'वैचारिक रीढ़' थी। उन्होंने पत्रकारिता को क्षणिक उत्तेजना के स्थान पर विवेक, मर्यादा और शोध के धरातल पर प्रतिष्ठित किया (सिंह, 2010)। उनके पत्रकारिता-दर्शन के तीन मुख्य स्तंभ थे-सत्य, मर्यादा और लोक-कल्याण। उन्होंने सिखाया कि पत्रकारिता का लक्ष्य सेवा होना चाहिए। उनके द्वारा प्रतिपादित भाषाई राष्ट्रवाद और संवैधानिक जागरूकता के सिद्धांत ही स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के आधार बने। वर्तमान युग में, मालवीय जी का दर्शन एक प्रकाश-स्तंभ की तरह मार्गदर्शन करता है। उन्होंने सिद्ध किया कि मर्यादा में रहकर भी सरकार के विरुद्ध प्रखर आवाज़ उठाई जा सकती है।

मदन मोहन मालवीय केवल एक पत्रकार नहीं थे, बल्कि अपनी लेखनी से एक आधुनिक और स्वाभिमानी राष्ट्र का निर्माण कर रहे थे। उनकी विरासत हमें याद दिलाती है कि कलम की शक्ति का उपयोग सदैव सत्य की रक्षा और समाज के उत्थान हेतु किया जाना चाहिए। मालवीय जी की पत्रकारिता भारतीय मेधा की विजय का प्रतीक है। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उनके पत्रों ने स्वाधीनता के बाद की भारतीय पत्रकारिता हेतु एक ऊँचा मापदंड निर्धारित किया। आज जब पत्रकारिता पर व्यावसायिक और राजनीतिक दबाव बढ़ रहे हैं, मालवीय जी के आदर्श अधिक प्रासंगिक हैं।

उनका विश्वास था कि पत्रकार का पहला और अंतिम धर्म राष्ट्र के प्रति वफादारी है। उनके द्वारा संचालित पत्रों ने जो बौद्धिक वातावरण तैयार किया, उसी ने स्वतंत्र भारत के संविधान को खाद-पानी दिया। मालवीय जी ने पत्रकारिता को एक पवित्र 'तपस्या' के रूप में जिया। उनकी यह 'वैचारिक विरासत' आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव मार्गदर्शक बनी रहेगी। उन्होंने पत्रकारिता को केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण का सबसे शक्तिशाली वैचारिक अधिष्ठान बनाया। उनकी लेखनी ने करोड़ों भारतीयों के मन में 'स्वतंत्र भारत' का बीज बोया, जो आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है।

### संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे. सी. (2004). मदन मोहन मालवीय: जीवन और विचार. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- मालवीय, मदन मोहन. (1961). महामना मालवीय: लेख और भाषण (संपादित). प्रयाग: अभ्युदय प्रकाशन।
- मिश्र, विद्यानिवास. (1998). हिंदी पत्रकारिता का इतिहास. वाराणसी: भारती भवन।
- पाण्डेय, रामशंकर. (1986). भारतीय राष्ट्रवाद और पत्रकारिता. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- शर्मा, रामविलास. (1992). राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी साहित्य. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- शुक्ल, रामचंद्र. (2002). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।

- सिंह, राम बहादुर. (2010). महामना मालवीय: पत्रकारिता के प्रतिमान. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
- जोशी, अरविंद कुमार. (2010). औपनिवेशिक भारत में प्रेस और राजनीति. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- नरेन्द्र मोहन. (2001). भारतीय प्रेस का इतिहास. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
- गुप्त, शिवप्रसाद. (1975). हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आंदोलन. काशी: ज्ञानमंडल।
- मिश्र, कृष्णबिहारी. (2005). हिंदी पत्रकारिता: जातीय चेतना और विकास. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
- Brown, Judith M. (1972). Gandhi's Rise to Power. Cambridge: Cambridge University Press.
- Chandra, Bipan. (1988). India's Struggle for Independence. New Delhi: Penguin Books.
- मिश्र, वाचस्पति. (2012). महामना मालवीय और हिंदी. इलाहाबाद: हिंदुस्तानी एकेडमी।
- पाण्डेय, सुधुकर. (2008). हिंदी पत्रकारिता: सिद्धांत और स्वरूप. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- सिंह, सूर्यबली. (2014). महामना मदन मोहन मालवीय: व्यक्तित्व और कृतित्व. नई दिल्ली: अनन्य प्रकाशन।
- मिश्र, प्रभात. (2011). आधुनिक भारत और मालवीय जी का चिंतन. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- सिन्हा, मृदुला. (2009). भारतीय पत्रकारिता के शिखर पुरुष. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
- कुमार, रवींद्र. (2015). महामना मालवीय और उनका युग. वाराणसी: बीएचयू प्रकाशन।
- पाठक, पी.एन. (2003). हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रवादी चेतना. इलाहाबाद: साहित्य भंडार।